Issue No. 1 May – August, 2024 Volume - 2

PTEC NEWSLETTER

अनुक्रमणिका

विदाई समारोह
ग्रीष्मकालीन अवकाश
सत्रीय परीक्षा
फुटबॉल मैच
फ्रेशर्स डे
हॉस्टेल का पहला दिन
कॉलेज का पहला दिन
उन्मुखीकरण कार्यक्रम
मुर्दा कल्याण और रोटी बैंक
लोयोला डे
व्यक्तित्व विकास सेमिनार
धान रोपनी
विश्व आदिवासी दिवस
स्वतंत्रता दिवस

सम्पादक मंडल

दीपक बिलुंग
अनिशा कुजूर

व्यक्तित्व विकासः दो टूक

जिस प्रकार फूल में खुशबू का, बत्ती में तेल का महत्त्व होता है उसी तरह व्यक्ति में व्यक्तित्व बहुत महत्त्वपूर्ण है। फूल में खुशबू एवं उसकी सुंदरता उसके बढ़ोतरी पर निर्भर करती है उसी प्रकार व्यक्ति की सुंदरता व्यक्ति के व्यक्तित्व में बढ़ोतरी के लिए विभिन्न चरण पर प्राप्त अनुभव एवं कार्यों पर निर्भर करती है।

सामान्यतः व्यक्तित्व का अर्थ हम हमारी दिखावापन को समझते हैं। यह अंशतः सच है लेकिन इसके साथ ही हम हमारी आन्तरिक प्रवृत्ति और अनुभव, हमारी आदतें और व्यवहार को भी नहीं नकार सकते हैं। इसलिए अपने व्यक्तित्व को बढ़ाने के लिए पहला कदम हम बढ़ाते हैं और वो है—अपने आप को जानना।

सुबह उठने से लेकर शाम में थककर चूर हो जाने तक हम विभिन्न अवसर पर दर्पण में अपने आप को निहारते हैं। जैसे—ब्रश करने के समय, बाल बनाते समय, कपड़े सजाते समय। ऐसा क्यों ? क्योंकि हम अपने व्यक्तित्व की चिंता करते हैं। हम सोचते हैं एवं चाहते हैं कि लोग हमें देखें और हमारी प्रशंसा करें ''कितना सुंदर लड़का है या ''कितनी खूबसूरत लड़की है।''

जब आप किसी अवसर या पार्टी में जाते हैं तो आपका प्रयास यह जरूर रहता है कि हम साफ और सुंदर कपड़ा पहनें। क्योंकि हमें अपने व्यक्तित्व की चिंता है। हम अपमानित नहीं होना चाहते।

सम्पादक

विदाई समारोह

महाविद्यालय में विदाई समारोह पूरे महाविद्यालय, प्रथम वर्ष के सभी छात्र–छात्राओं और शिक्षणगण के लिए खुशी की बात और दु:ख की बात दोनों एक साथ चल रही है, क्योंकि ये एक साल द्वितीय वर्ष के साथ कब खत्म हो गई पता ही नहीं चला। परीक्षा खत्म हुई कि नहीं अचानक एकदम से सब गायब हो गया। समझ नहीं आ रहा था हजारों यादें होंगी। ऐसा लगता था जैसे कल ही तो मिले थे। कुछ खालीपन सा महसूस हो रहा था क्योंकि द्वितीय वर्ष के साथ बिताए पल एक गोल्डन टाइम था जो हम एक साथ गुजारे। पर ऐसा लगा जैसे अभी तो हमने अपनी आँखें खोल कर देखा ही था कि पल भर में सब गायब।

जिंदगी में ऐसे पल हर वक्त आते हैं पर ये पल बहुत अलग था। बस दुआ है, हम सभी PTEC परिवार की तरफ से, आप जहाँ भी रहो, खुश रहो और आपकी हर कदम सफलता से पूर्ण रहे।

सुधीर ओरेया
द्वितीय वर्ष "B"

खट्टी–मीठी सी यादें

नए रास्ते खोजने को,
कुछ नया कर दिखाने को,
मंजिलों को अपना बनाने को,
थोड़े से नादान, थोड़े से समझदार,
परिंदे आज उड़ चले।

मिल बाँट कर जो खुशियाँ मनाते थे,
चुपके से हमारा टिफिन खा जाते थे,
वो हमको बहुत सताते थे,
वो हर चीज पर अपना हक जताते थे।

वो आपका डांटना, प्यार से समझाना,
छात्र शिक्षक बनकर पढ़ाना,
और स्कूलों में जाकर
शिक्षक की भूमिका निभाना,
हमें सिखाया ये बातें बहुत याद आएँगे।

आप सबका प्यार भरा साथ,
वो साथ बिताए पल,
खट्टी–मीठी सी यादें,
बहुत याद आएगी।

आज आँखों में आँसू तो हैं,
पर खुशी भी उतनी ही है,
क्योंकि आज हम भी,
जूनियर से सीनियर हो जाएंगे।

कॉलेज से तो विदा हो रहे हो आज
पर हमारे दिलों से नहीं,
आते–जाते मिलते जाना।

अंजली टोप्पो
द्वितीय वर्ष "B"

द्वितीय वर्ष का विदाई समारोह

विदाई का दिन बहुत ही खास होता है। यह दिन सभी के जीवन में कहीं–न–कहीं आता है। विदाई का अर्थ बिछुड़ना होता है लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं होता, यह दिन शुभकामनाएं देने का दिन होता है।

समय को देखते हुए प्रोग्राम छोटा ही रहा पर बहुत ही अच्छा रहा। मुझे खुशी हुई क्योंकि द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों को उनके लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हम सभी ने शुभकामनाएं दी। यह दिन मेरे लिए बहुत ही खास दिन था। मुझे अनुभव हुआ कि मैं अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अब एक कदम मेरे पैर ऊपर चढ़ेगे।

अंजु सुरीन

द्वितीय वर्ष "B"

द्वितीय वर्ष का विदाई समारोह

किसी ने सही कहा है "आने वाला पल जाने वाला है।" दो साल का Teacher's Training शुरू में हमें बहुत लम्बा लगता है पर ये वक्त कब आके चला जाता है, ये हमें पता ही नहीं चलता। आज हमारे सीनियरस् का Farewell है। Farewell शब्द सुनते ही मन में एक उदासी सा छा जाता है। हमारे सीनियरस् के चेहरे पर भी ये उदासी झलक रही थी। उनके दिलों में भी यहाँ से जाने का गम था। गम अपने सहपाठियों से बिछड़ने का, गम रोज दिन अपने फेवरेट टीचर से न मिल पाने का, गम अपने जीवन का एक खूबसूरत लम्हा बीत जाने का। Farewell के दिन मैं अपने सहपाठियों को देखकर सोच रही थी कि सच में "कुछ दिन महीनों साल बाद हम भी दूर हो जाएंगे, मंजिलों की तलाश में हम पर फैलाएंगे, किस्सों के पिटारों को लिए नए सफर पर जाएंगे। वो दोस्त मुझे हर दम, हर लम्हा याद आएंगे।

मनीषा टेटे

द्वितीय वर्ष "B"

विदाई समारोह

विदाई के दिन मुझे अच्छा नहीं लग रहा था क्योंकि इतने दिन साथ में रहने के बाद उनसे बिछड़ना पड़ रहा था। शुरूआत के दिनों से लेकर अंतिम दिनों तक वे हमारा मार्गदर्शन करते रहे कि महाविद्यालय में क्या करना है अथवा क्या नहीं करना है। वे मुझे बहुत प्रकार से मार्गदर्शन किए जैसे–माइक्रोटीचिंग के समय मुझे कुछ पता नहीं था कि मुझे क्या करना है तब मेरे सीनियरस् ने ही मुझे मदद किया और बताया कि ऐसे प्रस्तावना निकाला जाता है या ऐसे पाठ–योजना बनाया जाता है।

लेकिन बाद में थोड़ा अच्छा भी लगा क्योंकि वे अपनी मंजिल की ओर एक कदम आगे बढ़ रहे थे, फिर मैंने सोचा कि ये तो दुनिया का नियम ही है कि एक दिन सबसे बिछड़ना ही पड़ता है। सभी को अपनी मंजिल पाने कि लिए विछड़ना पड़ता है।

संजीत एक्का

द्वितीय वर्ष "B"

Summer Holidays

After a long time, I had a long holiday from 11th May onwards. I was so much exited to go home to meet my parents and friends. I had planned so many things to do during my holidays. First of all, I got a chance to vote for the first time in my life.

After spending few days at home, I went to Odisha for a small excursion with my brother. I enjoyed a lot playing in water at the beach. I visited some tourist places like: Sun temple, Puri Beach and Museum. I also tasted some food dishes which were so amazing and delicious. I spent two weeks in Odisha and after that I came back home safe and sound.

Prashant Kullu
2nd Year "B"

गर्मी छुट्टी का मेरा अनुभव

गर्मी छुट्टी में मेरा सबसे पहला काम मतदान करने का था, सो मैंने किया। उसके बाद मैं पारीश से सम्पर्क किया तथा अपने पारीश के बच्चों को बिनती (धर्म क्लास) सिखाया। मुझे बहुत खुशी हुई कि मुझे अपने आप को जानने तथा दूसरों को सिखाने का अवसर मिला।

फुर्सत के समय में अपने दोस्तों के साथ मस्ती किया और स्कूल तथा कॉलेज के सभी दोस्तों से मिला जिससे मुझे बहुत खुशी हुई। साथ ही, माता–पिता को घर के कामों में मदद किया जिससे मेरे माता–पिता भी बहुत खुश थे। अतः मैं यह आत्मविश्वास पूर्वक कह सकता हूँ कि यह छुट्टी मेरे लिए बहुत ही फलप्रद था।

अनुज टोपनो
द्वितीय वर्ष "B"

परिवार के सदस्यों के साथ समय बिताया

मेरे लिए गर्मी छुट्टी उतना आनंददायक नहीं रहा जितना कि मैं घर जाने के पहले सोच कर उत्साहित थी। हॉस्टेल से सोच कर गयी थी कि छुट्टी में खूब पढ़ाई करूंगी। लेकिन मुश्किल से पुस्तक खोल पायी।

घर में माँ की तबीयत खराब होने की वजह से उनकी सेवा करने में ही मेरा समय बीत जाता था। साथ ही, घर का सारा काम मुझे ही करना पड़ता था। बस एक बात से खुश थी कि इन परिस्थितियों के बहाने ही सही परिवार के सभी सदस्यों से मिलने एवं समय बिताने का अवसर मिला।

शांति मुर्मू
द्वितीय वर्ष "B"

गर्मी छुट्टी की सार्थकता

महाविद्यालय में करीब एक वर्ष का शिक्षण कार्य के पश्चात बढ़ती गर्मी के कारण हमारा महाविद्यालय लगभग 48–50 दिनों तक बंद रहा। इसी बीच छुट्टी में हुए कुछ अनुभवों को मैं साझा करना चाहता हूँ, जो इस प्रकार हैः

गाँव–परिवार का वातावरणः छुट्टी होने के दूसरे दिन मैं हॉस्टेल छोड़कर अपने घर की ओर प्रस्थान कर रहा था, उस वक्त मेरे अंदर हॉस्टेल और कॉलेज की कुछ यादें सता रहा थी। क्योंकि मैं हॉस्टेल से निकलने के बाद धीरे–धीरे गाँव के करीब होता जा रहा था। गाँव पहुँचते ही परिवार के सभी सदस्यों, दोस्तों से मुलाकात करने के बाद मुझे खुशी तथा पारिवारिक प्रेम का अनुभव मिला। लम्बे समय के बाद परिवार से अपना प्यार मिला।

दिनचर्या में होने वाली परिघटनाएँः घर पहुँचते ही पारिवारिक परिस्थिति को देखते हुए मैं रोजगार के रूप में कुछ काम करना शुरू किया। मैं ट्रैक्टर में बालू, पत्थर आदि ढुलाई का काम करने जाने लगा। प्रतिदिन सुबह से लेकर शाम तक काम करने लगा। मैं अपना सारा लज्जा एवं सुस्तीपन को त्याग, मेहनत करता रहा। अंततः 46 दिन मेहनत करके लगभग 22,500 रूपये इकट्ठा कर लिया, जिसे मैं कॉलेज खुलने पर 20,000 रूपये छात्रावास फीस के रूप में जमा कर पाया। इस दौरान मुझे बहुत सारे अनुभव प्राप्त हुए। उनमें से मुख्यतः हैंः मेहनत के वास्तविक महत्त्व का अंदाजा हुआ, प्रत्येक परिस्थिति में अपने–आप को सुव्यवस्थित रखने का अनुभव मिला, कार्य के प्रति सहनशीलता का अनुभव, जीवन में मेहनत का महत्त्व का अनुभव रहा।

सीखः परिस्थिति चाहे जैसा भी हो उसका सामना करना चाहिए। जीवन में अगर सफलता पाना हो, तो सारा आलसीपन और लज्जा को त्यागना पड़ता है। पारिवारिक कमजोरी को लेकर हुनर को छोटा नहीं समझना चाहिए। शिक्षण कार्य में मजबूती बनाए रखने के लिए पठन–पाठन कार्य के साथ–साथ अन्य रोजगार कार्य पर भी मेहनत करके अपना योगदान देने की आवश्यकता है।

प्रियाल मिंज
द्वितीय वर्ष "B"

Summer Vacation

Summer vacation, a period eagerly awaited by students across the world, is not merely a break from the academic routine but an image of opportunities. It's a time when the scorching Sun bestows upon us the chance to plunge into a world of exploration, relaxation and learning beyond the confines of a classroom. The very thought of summer vacation fills our hearts with joy. It's a time when the rigidity of school schedules melts away, and the days stretch out like a lazy river, inviting us to swim in its possibilities. Students eagerly anticipate this break as it offers them a respite from exams, homework and the daily hustle of the school life.

Summer vacation is the golden opportunity for new experiences. It's the perfect time to travel, explore new places and immerge oneself in different culture. It's an excellent opportunity to strengthen areas of academic without the pressure of imminent exams. It was a good and valuable time for me for reflection and personal growth. I also learnt to contemplate my personal goals, aspiration and values.

Susana Toppo
2nd Year "B"

एग्जाम का सीजन

एग्जाम का आया सीजन
अपना पाठ करो रिवीजन
मत करो कभी समय बर्बाद
समझो, लिखो तब करो याद
एग्जाम से तुम न घबराना
आत्मविश्वास बनाए रखना
सब अच्छे से हो परचे
तब सुखदायी होंगे नतीजे
कठिन मेहनत का परिणाम
अच्छे अंकों का इनाम
याद रखो सदा यह तुम
पढ़ाई से न जाना कभी दूर।

सोनाली एक्का
द्वितीय वर्ष "B"

परीक्षा का त्योहार

सारे त्योहारों की तरह हमारे लिए एक और महत्त्वपूर्ण त्योहार आता है और वो है सेमेस्टर की परीक्षा। परीक्षा सुनके दिल की धड़कन इतनी तेज हो जाती है कि कहना ही नहीं। लेकिन अच्छा भी लगता है, हमारे अंदर की क्षमताएँ निकल आती हैं। महाविद्यालय के शिक्षक इतने अच्छे तरीके से पढ़ाते हैं कि एक बार कॉपी पलट के देखे तो याद ही आ जाती है। लेकिन भी कुछ–कुछ भूल जाती हूँ। फिर रात में कभी–कभी नींद भी नहीं आती है, ये सोच कर कि मैं अच्छे नम्बरों से पास करूंगी या नहीं। परंतु मुझे अपने ऊपर भी विश्वास एवं भरोसा रहता है कि पास कर जाऊँगी और मैं पास करती भी हूँ। क्योंकि हमारे शिक्षक इतने अच्छे पढ़ाते हैं और मुझे अपने ऊपर विश्वास भी तो है, क्यों न पास करूं, मेहनत जो करती हूँ। कहते हैं न, "लहरों से डर कर नैया पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।" मेहनत करते रहो, आगे बढ़ते रहो।

नोशीला कुमारी
द्वितीय वर्ष "B"

सेमेस्टर एग्जाम का अनुभव

सेमेस्टर की परीक्षा लिखने के दौरान सुखद और दुखद दोनों प्रकार का अनुभव रहा। दुख इस बात का था कि एक ही दिन में दो विषयों का परीक्षा देना था जिसके कारण मैं स्वयं को पूर्ण रूप से तैयार नहीं कर पाता था। साथ ही साथ परीक्षा के पूर्व द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों को विदाई देने के लिए डांस भी अभ्यास करता था जिससे मैं खुद को परीक्षा के दरमियान अस्थिरता पाया।

परीक्षा का सुखद अनुभव इस बात का था कि मेरे सामने एक बहुत बड़ी समस्या थी जो हमें उस समस्या को मस्तिष्क एवं शारीरिक रूप से मजबूत होकर उनसे आगे निकलना था और वह समस्या परीक्षा था। यह परीक्षा हमारे जीवन के लिए बहुत ही बड़ा रोल अदा किया। परीक्षा के परिणामतः मेरे कल्पना शक्ति, रचनात्मक शक्ति एवं तर्क–वितर्क करने के शक्तियों का विकास हुआ। सबसे मुख्य बात रहा कि मुझे समय प्रबंधन का ज्ञान हुआ। इतने कम समय में अपने को मैंने पूर्णता तैयार किया।

परीक्षा देकर मुझे बहुत ही आनन्द महसूस हुआ। परीक्षा मुझे अपने विचारों को प्रस्तुत करने का बड़ा मंच प्रदान किया। परीक्षा विषम परिस्थिति में निखारने का अवसर देते हैं।

रिंकुलाल हाँसदा
द्वितीय वर्ष "B"

सेमेस्टर एग्जाम

एग्जाम विद्यार्थी जीवन के लिए अपने आप को जाँचने का एक अच्छा माध्यम है। जिससे एक विद्यार्थी अपने–आप में पढ़ाई की जो त्रुटियाँ, कमियाँ हैं उसे जान पाता है और उन कमजोरियों तथा त्रुटियों को सुधारने की प्रेरणा मिलती है।

PTEC में हमारा सेमेस्टर एग्जाम सिलेबस के अनुसार सभी विषयों को पढ़ाया गया। उन्हीं में से हमने एग्जाम की तैयारी की। पढ़ने का मन तो नहीं कर रहा था, लेकिन कहा जाता है कि "विद्यार्थियों का दर्पण पुस्तक है और किया हुआ मेहनत कभी व्यर्थ नहीं होता"। मैं न चाहते हुए भी सुबह जल्दी उठकर सभी विषयों की पढ़ाई की और एग्जाम लिखी। इस प्रकार मेरे मेहनत का फल भी प्राप्त हुआ, पर मैं अपने प्राप्त अंकों से संतुष्ट नहीं हुई। मुझे लगने लगा कि थोड़ा और अच्छा से पढ़ाई की होती तो और ज्यादा अंकों से पास होती।

अनुरागिनी तिर्की
द्वितीय वर्ष "B"

कॉलेज में फुटबॉल मैच

"खेल में न जीतना जरूरी है, न हारना जरूरी है,
यह एक खेल है, जिसे खेलना जरूरी है।"

मैच का उद्घाटन प्राचार्य फा. पी.जे.जेम्स, फा. राज, सि. शीला के द्वारा हुआ। उसके पश्चात् दोनों टीम पूरे जोश के साथ सभी नियमों का पालन करते हुए मैच खेलने लगे। कुछ समय बाद द्वितीय वर्ष के छात्रों की टीम ने 1–0 से बढ़त बनायी। तब प्रथम वर्ष के टीम में खेल के प्रति जोश और बढ़ गया। वे पूरे परिश्रम और लगन के साथ खेलने लगे। कुछ देर में पूरी कोशिश करने के बाद सफलता मिली। और मैच बराबरी में रही।

दर्शकगण भी दोनों टीमों को पूरे उत्साह के साथ प्रोत्साहित कर रहे थे। दर्शकों में उतना ही जोश था जितना खेलने वाली टीमों में। ताली बजा–बजाकर दर्शकगण दोनों टीमों को प्रोत्साहित कर रहे थें। अंतिम में दोनों टीम बराबरी पर रही।

मैच समाप्त होने के बाद सभी पंक्ति में खड़े हो गए। दोनों टीम के सदस्यों को बधाईयाँ दी गयी। खेल लीडर के द्वारा खेल से संबंधित बातें बतलायी गई, मिठाइयाँ मिली। साथ ही, लड़कियों के लिए भी फुटबॉल मैच आयोजन करने का विचार रखा गया।

असरीता एक्का
द्वितीय वर्ष "B"

फुटबॉल मैच

मुझे खेल बहुत ही पसन्द है और हमारे महाविद्यालय में प्रथम वर्ष और द्वितीय वर्ष के बीच में हुआ फुटबॉल मैच। दोनों ही टीमों ने बहुत मेहनत किया। दोनों ने एक–एक गोल कर बराबरी पर रहे। हम सभी प्रशिक्षणार्थी ताली बजाते हुए उनका हौसला बुलंद कर रहे थे। दोनों टीमों के खेल एवं मेहनत को देखकर मुझे बहुत खुशी हुई और अनुभव हुआ कि किसी भी परिस्थिति में हार नहीं माननी है। जिंदगी में मेहनत करके बढ़ना बहुत जरूरी होता है। वैसे तो जिंदगी भी एक खेल का मैदान है जहाँ हम प्रतिदिन समस्याओं का समाधान करते हैं।

सालेम मुर्मू
प्रथम वर्ष "B"

फुटबॉल मैच

सुहावने पल में एक मैच ऐसा था
भींगे–भींगे मैदान में
खिलाड़ी मैदान में कूदे
जोश एवं जुनून था हृदय में
सुहावने पल में एक मैच ऐसा था

हल्की धूप उन्हें सिखा रही थी
दौड़ मेरे खिलाड़ियों
लक्ष्य तेरे समीप है
जीत तेरे करीब है
सुहावने पल में एक मैच ऐसा था

पेड़ों की छांव, दर्शकों को हँसा रही थी
मस्त डालियाँ हवा को बिखेर रही थी
इन पेड़ों के संग हौसला बढ़ाया दर्शकों ने
सुहावने पल में एक मैच ऐसा था

रही जीत की बात
न कोई जीता, न कोई हारा
निकले दोनों टीम मजबूत एवं होशियार
चेहरों में मुस्कान दिल में खुशी लिए
चल दिए मंजिल को पाने
सुहावने पल में एक मैच ऐसा था

अलिशा तिर्की
प्रथम वर्ष "B"

यह दास्ताँ है, 6 जुलाई 2024 की। सुबह के लगभग 10:30 बज रहे थे। मौसम रमणीय था, महफिल में बस चवन्नी मुस्कानों की बरसात हो रही थी। तभी मंच पर हमारे महाविद्यालय के कप्तान ने घोषणा की कि अभी दस मिनट की छोटी अवधि के पश्चात् सभी प्रशिक्षणार्थीगण हमारा अगला कार्यक्रम के लिए मैदान की ओर प्रस्थान करेंगे।

और यह कार्यक्रम था–फुटबॉल मैच का। जहाँ एक टीम शातिर एवं अनुभवों से भरा शहंशाह था, तो दूसरी टीम नयी उत्साह एवं जोश से भरा बादशाह। हम सभी निर्धारित स्थल पर पहुँच गए और तालियों की गूँज से खिलाड़ियों का स्वागत किये।

कप्तान के सीटी बजाते ही हमारे हृदय के धड़कन की गति मानो 100 मीटर की दौड़ का इंतजार लिए खड़ा था, जोरों से धड़कने लगा। जब कभी दूसरे टीम की गेंद गोल होने पर रहती, तो धड़कन की गति रफ्तार तो कभी मंद हो जाती। और मेरी आँखों की रेटिना कभी दायीं तो कभी बायीं नाचते हुए मैच का आनन्द लेती।

परंतु, ना एक ने हार मानी और ना दूजा। दोनों पक्षों के खेल प्रेमियों ने बराबरी का जंग जीता। इस प्रकार एक दर्शक के रूप में मेरा फुटबॉल मैच प्रतियोगिता का कार्यक्रम बहुत ही यादगार रहा।

रिया रितिका हेम्ब्रोम
प्रथम वर्ष "B"

Freshers’Day का अनुभव

मेरे लिए बहुत ही रोमांचक रहा। चाहे वह हमारा वेलकम हो या हमारा फुटबॉल मैच। ऐसा पहले भी मेरे साथ हो चुका था पर स्वागत के साथ फुटबॉल मैच का आयोजन यह मुझे व्यक्तिगत् रूप से बेहद अनोखा और हर्षोल्लास भरा लगा। फुटबॉल मैच के बारे में मुझे लग रहा था कि हमलोग हार जाएँगे, पर ऐसा नहीं हुआ। और यह मेरे लिए आश्चर्य की बात थी, क्योंकि हमारे सीनियर ने हमें बताया था कि पिछले बार वे लोग मैच जीते थे। तो मुझे भी लग रहा था कि हमलोग हार ही जाएंगे। पर ऐसा हुआ नहीं। मैच 1–1 की बराबरी पर समाप्त हुआ। वह दिन मुझे जीवनभर स्मरण रहेगा।

अनिश कुमार पासवान
प्रथम वर्ष “B”

हम सभी ने Freshers’ Day की शुरूआत प्रार्थना के द्वारा किया और हम सभी ने सम्पूर्ण रूप से भाग लिया। यह दिन हमारे लिए बहुत ही खुशी का दिन रहा। इस दिन में हमारे बड़े भाईयों एवं बहनों के द्वारा हमारा स्वागत किया गया। इस दिन का मेरा अनुभव यह था कि हमने किसी कॉलेज के द्वारा पहली बार ऐसे कार्यक्रम में भाग लिए हैं एवं हमें लगता है कि हम भी एक शिक्षणार्थी के माध्यम से हमारे कर्त्तव्यों का पालन करेंगे एवं बहुत ही उत्सुकता के साथ किसी भी कार्यक्रम में भाग लेने का प्रयास करेंगे। मेरा अनुभव यह भी रहा कि सभी चीजों को दृढ़ संकल्प एवं लगनता से करना चाहिए। इससे हमारे मन एवं मस्तिष्क में कार्यात्मक एवं गतिविधि का विकास होता है।

अनिश केरकेट्टा
प्रथम वर्ष “A”

Freshers’ Day मेरे लिए बाकी प्रोग्राम की तरह ही अनोखा और उल्लास भर रहा। जहाँ मुझे यह देखने के बाद बहुत आनन्द मिला कि हम सभी अलग–अलग समुदाय से आते हैं फिर भी कभी हमलोगों को ये एहसास नहीं हुआ कि हम दूसरों से भिन्न हैं। यही बात मुझे इस कार्यक्रम में पहली आकर्षक बात लगी। दूसरी बात थी समय की उपयोगिता पर खूब ध्यान दिया गया। सभी कार्यक्रमों की शुरूआत निर्धारित समय पर हुआ साथ ही समापन भी समय पर हुआ। समय के महत्व को समझा गया। सीनियरस् का मैं शुक्रिया अदा करता हूँ जिन्होंने मुझे यह एहसास दिलाया कि समय–प्रबंधन की कला से प्रोग्राम में ही केवल नहीं बल्कि जीवन जीने की शैली को भी बदला जा सकता है। अंततः मैं बताना चाहता हूँ कि समय को पहचानकर, उसे अपने परछाई की तरह पकड़कर चलना चाहिए। समय मूल्यवान है और हमारा जीवन भी।

गोडविन मिंज
प्रथम वर्ष “B”

The freshers’ day

Today was the day of joy because all the 1st year students were welcomed. It was really a very joyful day and I hope all the students of PTEC might have enjoyed and felt oneness in PTEC. The 2nd year students put a batch on all the first year students. Then the first year students were taken to the multipurpose hall by singing a song. The principal gave a short speech and welcomed the 1st year and encouraged them to be happy in all their activities of the PTEC. We were welcomed by one beautiful welcome song. Prayer dance and many other programmes were there which made us feel very happy, joyful and encouraged to begin our classes with great zeal and hope.

Josphin Marandi
1st year “B ”

1st day of my hostel

On the 1st of July 2024, I joined PTEC hostel. I had mixed feeling inside me. Because it was my first experience of the hostel life. When I reached here I felt little bit nervous because I was new here and had no friends. I was nervous thinking how I would manage myself over here. When others came then I felt little well. On the second day, I made some friends and soon I adjusted myself. So, this was my little experience of my first day in the hostel.

John Ronald Kongari
1st year "A"

छात्रावास में अनुभव

मैं जब घर से छात्रावास पहुँचा, तो मुझे यहाँ का सुंदर परिसर देखकर बहुत अच्छा लगा। छात्रावास परिसर बहुत ही साफ–सुथरा था। मुझे अनुभव हुआ कि यहाँ रहना मेरे लिए लाभप्रद एवं शिक्षाप्रद होगा। जैसे ही छात्रावास में प्रवेश किया, तब हमारे द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों ने मेरे सामानों को उचित जगह पहुँचाने में मदद किया। इससे मुझे अनुभव हुआ यहाँ सहयोग की भावना है। जो मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं अपने कमरे में गया तथा थोड़ा आराम करने के बाद मुझे घर की याद आयी। मेरा मन थोड़ा उदास सा हो गया। मैं सोच रहा था कि मैं यहाँ रह पाऊँगा या नहीं। ये बात मुझे सताने लगी थी। कुछ देरी में ही कुछ और प्रशिक्षणार्थियों का आगमन हुआ। उनसे मुलाकात करते हुए अपना–अपना परिचय हुआ। तब मुझे एहसास हुआ कि जीवन में कुछ पाना या करना है तो त्याग की भावना होना है। इस बात को ध्यान में रखते हुए अब मैं लक्ष्य को केन्द्रित करते हुए छात्रावास में रहकर अपनी पूरी लगन, निष्ठाा के साथ कर्त्तव्य का पालन करूंगा, ऐसी भावना उमड़ पड़ी। छात्रावास भी परिवार की तरह ही है जहाँ एक–दूसरे के प्रति सहयोग, प्रेम की भावना है। मैं अपनी जिंदगी में कभी भी छात्रावास में नहीं रहा इसलिए मुझे शुरूआत में अटपटा–सा लग रहा था, क्योंकि यहाँ अलग–अलग क्षेत्र, समुदाय से प्रशिक्षणार्थी आए हैं। एक–दूसरे से संबंध स्थापित करने में थोड़ा समय लगा। अब मैं लगभग सभों से परिचित हो गया हूँ, इसलिए अब मैं बहुत अच्छा महसूस कर रहा हूँ।

सिगिन मुंडा
प्रथम वर्ष "A"

हॉस्टेल का पहला दिन

जब मैं हॉस्टेल आई तो मुझे बुरा तो नहीं लग रहा था, थोड़ा अनजान सा लगा। बुरा इसलिए नहीं लगा क्योंकि मैं बचपन से चाहती थी हॉस्टेल में रहने के लिए, ऐसा मौका तो मिला लेकिन कोरोना के दौरान वो भी हाथ से निकल गया। फिर दुबारा ये मौका पाकर मैं बहुत ही खुश हो गई। हॉस्टेल में आकर समय में बंधे रहना, हरेक नियम का पालन करना, रोज मिस्सा जाना इन सभी चीजों से जुड़े रहकर मुझे बहुत अच्छा लगता है।

क्रूसिता तिर्की
प्रथम वर्ष "A"

मैं जब हॉस्टेल में पहला दिन आई तो मेरे मन में बहुत सारे विचार आने–जाने जैसे–यहाँ का नियम क्या होगा, कैसे होगा, मैं रह पाऊंगी या नहीं, मेरा मन लगेगा की नहीं? बस इन्हीं सब विचारों से मैं चिंतित होने लगी और फिर अपने कमरे में जाकर चुपचाप से बैठ गयी। फिर मेरे कमरे में दूसरी लड़की आई। मैं तब भी चुप ही बैठी थी क्योंकि मैं लोगों से जल्दी घुल–मिल नहीं सकती। मेरे मन में यही विचार आने लगता है कि क्या वो मेरे से बात करेगी या फिर इग्नोरे करके चली जाएगी, लेकिन फिर हुआ क्या जैसे ही दूसरी लड़की मेरे कमरे में आई उसने खुद से आकर मेरे से बात किया। तब जाकर मुझे अच्छा लगा कि चलो अब तो कोई है मेरे साथ हॉस्टेल में भी।

प्रिया एक्का
प्रथम वर्ष "A"

हॉस्टेल का पहला दिन

बेसब्री से इंतजार के बाद मेरे जीवन में वो दिन आ ही गया जिसकी मैं सोते–जागते काम करते उन ख्यालों में खोई रहती थी कि वह कब आएगा और उस दिन का क्या मौसम होगा? कैसे जाऊंगी? क्या करना होगा? क्या मैं वहाँ होने वाली क्रिया–कलापों को कर सकती हूँ या नहीं? अनेकों इस तरह के सवालों से घिरी 5–6 घण्टों की सफर के बाद अपने सपनों की संकीर्ण रास्ता में चल पड़े वो दिन था 1 जुलाई 2024। यह पहला दिन बेचैनी से भरा था, थोड़ी खुशी, थोड़ा गम के अनुभवों से हर एक नयी चीजों को मैं अनुकरण करने की कोशिश में लगी रही। इन्हीं नयी चीजों के साथ शाम ढल गई और संध्या समय में अनेकों नए चेहरों से मुलाकात करने का मौका मिला। जिनसे मिलकर आनन्दमय माहौल लगने लगा। लेकिन भीड़ में खुद को व्यवस्थित करना बहुत कठिन होने लगा था। मेरे मन में चल रहे हजारों सवालों का उथल–पुथल विचारों को एक सवाल ने एकदम रोक डाला, वो प्रश्न है– मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से हूँ? मैं अकेले कुछ मिनटों के लिए बालकॉनी में बैठी और ठण्डी हवा के झोकों के साथ खुद को शांत किया और अपने शयन–कक्ष में मैं जाकर लेट गई। इन्हीं सवालों के साथ करवट लेते रही और अंततः मैं निद्रा देवी की गोद में सो गयी।

रोस केरकेट्टा
प्रथम वर्ष "A"

कॉलेज का पहला दिन : समझ में नहीं आ रहा था कि करना क्या है?

कॉलेज का पहला दिन मेरे लिए बहुत ही अलग था क्योंकि आज तक कभी भी मैं कॉलेज नहीं गई थी। तो मुझे कॉलेज का पहला दिन में कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि क्या करना है और क्या नहीं करना है। उसके बाद जब मैं यहाँ आई तो मुझे बहुत ही अच्छा लगा क्योंकि यह कॉलेज दूसरे अन्य संस्थाओं से बहुत ही अलग है। यहाँ का अनुशासन मुझे बहुत ही ज्यादा पसंद आया। उसके बाद फादर रंजीत ने हमें शिक्षकों से जुड़ी बहुत सारी बातें बतायी जो मुझे बहुत अच्छा लगा। उन्होंने हमें बताया कि हम एक शिक्षक बनकर समाज में कैसे सेवा कर सकते हैं। एक शिक्षक को ईश्वर कैसे लोगों की सेवा करने के लिए बुलाया है। मुझे पता चला कि एक शिक्षक होना समाज में कितना महत्त्वपूर्ण है।

मेहर परवीण

प्रथम वर्ष "A"

जर्नल राइटिंग का महत्त्व

इस वर्ष महाविद्यालय में उन्मुखीकरण का कार्यक्रम गत वर्ष की अपेक्षा मेरे लिए अधिक रोचक एवं लाभकारी रहा। उन्मुखीकरण कार्यक्रम में मैं जर्नल राइटिंग के फायदों को जानकर काफी प्रभावित हुआ। तब से ही मैंने जर्नल राइटिंग शुरू कर दिया है। इसके माध्यम से मुझे अपने जीवन को या कहें दिनचर्या को 'थर्ड पर्सन पर्सपेक्टिभ' (चलचित्र) की तरह देख पा रहा हूँ। पूरे कार्यक्रम में मुझे जर्नल राइटिंग का विषय ही बहुत अच्छा लगा।

विकास तिग्गा

द्वितीय वर्ष "B"

गर्मी छुट्टी के बाद कॉलेज का पहला दिन

लंबी गर्मी छुट्टी के बाद
आज हुई मुलाकात अपने दोस्तों से
थी सबमें कॉलेज आने की इच्छा
आज वो पूरा हुआ।

खिल आए थे हमारे कॉलेज फूलवारी में
रंग–बिरंगे नए–नए फूल
देख जिसे हम हुए बेहद खुश
हमने उनका जोरदार स्वागत किया
अपने कॉलेज में।

झलक रहे थे सबके चेहरे में
नई उमंग और जोश
जिन्हें देख पूरा कॉलेज हुआ मदहोश।

प्रिया कुल्लू

द्वितीय वर्ष "B"

कॉलेज का पहला दिन एवं उन्मुखीकरण कार्यक्रम

गर्मी छुट्टी के बाद कॉलेज का पहला दिन

शिक्षक समाज के दर्पण होते हैं

कॉलेज का पहला दिन

पहले दिन की शुरूआत ईश्वर को याद करते हुए तथा उसकी महिमा गान के द्वारा किया गया। उसके बाद फादर रंजीत के द्वारा बहुत अच्छी–अच्छी बातों को बताया गया जो मेरे लिए एक प्रेरणा का स्रोत बन गया। वह इस प्रकार है– ईश्वरीय बुलाहट को जानना और उसमें आगे बढ़ना। इसमें बहुत सारी अलग–अलग बुलाहट के क्षेत्र हैं और एक शिक्षक होने के लिए एक शिक्षक के विभिन्न गुणों के बारे विस्तार से बताये, जो मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं इस बात से प्रेरित हुई कि मैं भी एक शिक्षिका के रूप में चुनी गई हूँ और अपनी जो भी कार्य, सेवा, समर्पण और ईमारदारी, जो एक शिक्षक में होनी चाहिए, उसे मैं ईमानदारी से अपना मिशन कार्य समझकर पूरा करना चाहूँगी।

स्वाति हुरहुरिया
प्रथम वर्ष "B"

फादर रंजीत के द्वारा बहुत अच्छा वक्तव्य दिया गया कि एक अच्छा शिक्षक बनने के लिए समर्पण, प्रतिबद्धता और सेवा की आवश्यकता होती है। एक शिक्षक समाज का दर्पण होता है जो विद्यार्थी कमजोर, गरीब होता है वह शिक्षक को एक दर्पण की तरह देखकर अपने आपको देखता है और उसके अनुसार ढालता है। इन शब्दों को सुनकर मुझे यही अनुभव हुआ कि शिक्षक का काम आसान नहीं है। जिस तरह एक मोमबत्ती स्वयं को जलाकर दूसरों को रोशनी देता है, उसी तरह एक शिक्षक भी अपने को त्यागकर दूसरों को शिक्षित करता है। मुझे ये सब सुनकर बहुत अच्छा लगा और प्रेरणा पायी कि शिक्षक के गुण को अपनाएं और समाज का दर्पण बनकर दिखाएं। मुझे आज के इस दिन में बहुत खुशी हुई कि मैं इस तरह के कार्यक्रम में भाग ली।

समीरा टेटे
द्वितीय वर्ष "B"

महाविद्यालय में तीन दिनों का उन्मुखीकरण कार्यक्रम में मुझे अपने जीवन के लिए बहुत सीखने का मौका मिला। "शिक्षक समाज के दर्पण होते हैं" यह वाक्य मुझे बहुत ही प्रभावित किया। एक शिक्षक सचमुच समाज के लिए दर्पण हैं, क्योंकि वे भटके लोगों को अंधकार से प्रकाश की ओर राह दिखाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई बच्चा पढ़ने में कमजोर है तो एक शिक्षक उस पर ज्यादा ध्यान देता है और उसे एक साहसी बालक बनाता है। एक शिक्षक अपने ज्ञान को बच्चों के बीच बाँटता है, अपने कर्त्तव्य को निष्ठापूर्वक निभाता है, वह न केवल अपनी ड्यूटी निभाता है बल्कि बच्चों के प्रति प्यार, लगाव और उन्हें सिखाने के लिए धैर्य रखता है। वह बच्चों को सिखाता है और हरेक बच्चों का नाम तथा उनके परिवारों के बारे में जानता है। कभी–कभी वह बच्चों के परिवारों से मिलता है और उन्हें मदद करने की पूरी कोशिश करता है।

अनामिका कुल्लू
प्रथम वर्ष "A"

कॉलेज का पहला दिन

यह दिन मेरे जीवन का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण दिन था क्योंकि मेरे जीवन का जो लक्ष्य है उसकी ओर पहला कदम था। इस दिन का इंतजार मैंने बड़ी ही बेसब्री से किया था। मेरे मन में सुबह से ही एक जोश, उमंग और थोड़ी घबराहट थी। मन में कई प्रश्न उठ रहे थे कि आज का पहला दिन कैसा होगा? कौन–कौन से क्रियाकलाप होंगे? उन क्रियाकलापों को मैं अच्छे से कर पाऊंगी या नहीं? इन सभी मनोभावों के साथ मैंने कॉलेज में प्रवेश किया। कॉलेज का प्रथम दिन की शुरूआत प्रार्थन सभा से की गयी। प्रार्थना सभा के बाद मुझे ऐसा लगा कि मन में जो घबराहट थी वह छू मंतर हो गयी। बाद में फा. रंजीत मरांडी के द्वारा प्रेरणादायक बातों, शिक्षक जीवन का उद्देश्य, शिक्षक के कार्य और एक अच्छा शिक्षक क्या होता है, इनके बारे में सुनने और सीखने का अवसर मिला। शिक्षक जीवन एक बुलाहट है। यह बात मेरे मन को छू गई क्योंकि मैंने अपनी इस बुलाहट को पहचाना और मैंने दृढ़ संकल्प किया कि मैं अपने शिक्षक जीवन को बच्चों के लिए पूर्ण रूप से समर्पित करूँगी और एक आदर्श शिक्षिका बनूँगी।

अनुजा नेहा पन्ना
प्रथम वर्ष "B"

शिक्षक के रूप में बुलाहट

शिक्षण महान पेशों से भी अधिक महान है। यह एक अहवान है, यह एक बुलाहट है। शिक्षक एक खान के समान होते हैं जो अनेक गुणों से भरे होते हैं। शिक्षक हर एक बच्चों के नामों को जानने का प्रयास करते हैं। एक अच्छा शिक्षक बनने के लिए समर्पण, प्रतिबद्धता और सेवा की आवश्यकता होती है। **शिक्षक बनना आसान होता है पर शिक्षक होना आसान नहीं होता।** जब हम शिक्षण को एक पेशा चुनते हैं तो हम समर्पण के साथ पढ़ाते हैं। शिक्षक अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञानता से ज्ञान की ओर, मृत्यु से अमरता की ओर लाते हैं। शिक्षक समाज को सही रास्ता दिखातें हैं। शिक्षक दूसरों के लिए प्रेरणा के रूप में होते हैं। शिक्षक हर एक बच्चे के चरित्र निर्माण की चिंता करते हैं।

रोबिन किन्डो
प्रथम वर्ष "A"

जानकारी अर्जित करना, सफलता की ओर बढ़ना

महाविद्यालय में तीन दिनों का उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें हमें बहुत सारी अच्छी–अच्छी बातें बतायी गयी। विशेषकर, महाविद्यालय के नियम व कानून, एक आदर्श शिक्षक, महाविद्यालय परिसर तथा अनेक विषयों से परिचय कराया गया जिससे कि हमलोग बिल्कुल अपरिचित थे। कार्यक्रम के दौरान अनेक व्याख्यातागण सामने आये और अपनी जानकारी के अनुसार अपने विषय वस्तुओं का एक छोटा परिचय कराया।

यह तरीका, महाविद्यालय में क्लास शुरू करने से पहले चीज वस्तुओं और विषय–वस्तुओं से परिचय कराना बहुत अच्छा लगा। क्योंकि यदि हम कॉलेज के पहले दिन से ही क्लास में पाठ्यवस्तुओं को पढ़ने लगते तो आधारभूत चीजों की जानकारी नहीं हो पाती और क्लास में मन नहीं लगता। क्योंकि किसी चीज को करने से पहले उसके बारे में जानना बहुत जरूरी होता है। तभी हम उस कार्य में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

अरनेस्ट भेंगरा
प्रथम वर्ष "A"

दूसरों का जीवन निर्माण शिक्षक का परम कर्त्तव्य

''पवित्र मिस्सा को ख्रीस्तीयों के धार्मिक अनुष्ठान के अनुसार यह सभी आशीषों एवं कृपाओं का केन्द्र बिन्दु है।''

When you are happy you enjoy the music but when you are sad you understand the lyrics.

इस वर्ष सत्र 2024–26 नये सत्र की शुरूआत पवित्र आत्मा के मिस्सा से किया गया। प्रथम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के लिए आज का दिन बहुत ही महत्त्वपूर्ण था। वे बहुत उत्सुकता से कॉलेज में आये थे। कुछ लोग बहुत खुश नजर आ रहे थे तो कुछ चिंतित थे कि क्या होने वाला है? सभी स्टाफ और द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षणार्थी नये सत्र को शुरू करने के लिए उत्साहित थे। इसी भावनाओं के साथ मिस्सा में हमने सक्रिय रूप से भाग लिया।

पवित्र मिस्सा में फा. फिलमोन तिर्की ने बहुत ही प्रभावशाली संदेश देकर हमें प्रभावित किया। उन्होंने बाईबल के वचनों के आधार पर ''बीज बोने वाले का दृष्टान्त'' को बताया। कि कुछ बीज कंटीली झाड़ियों पर गिरे, कुछ रास्ते के किनारे और कुछ बीज अच्छी भूमि पर। जो बीज अच्छी भूमि पर गिरे वे कोई साठ गुणा, कोई सत्तर गुणा और सौ गुणा फल लाये। एक टीचर बनकर हमें भी फल उत्पन्न करना चाहिए। हमलोग सभी अच्छी भूमि पर गिरे हुए बीज के समान हैं ताकि हम सही समय पर फल उत्पन्न कर सकें। दूसरों का जीवन निर्माण करना हमारा परमकर्त्तव्य है।

दूसरी ओर, मुझे और हम सभी को जीवन में आने वाले संघर्षों एवं चुनौतियों से लड़कर जीवन में हमेशा आगे की ओर बढ़ते रहने की आवश्यकता है। जब हम आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं तब कई समस्याएँ सामने आते हैं। उस समय पवित्र आत्मा हमारा सहायक के रूप में कार्य करता है। हममें पवित्र आत्मा के सातों वरदानों को समाहित करने की आवश्यकता है।

अलबीना कन्डुलना
द्वितीय वर्ष ''B''

मेहनत इतिहास बनाती है

उन्मुखीकरण कार्यक्रम में भाग लेकर मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं खुद को भूल चुका था कि मैं कहाँ हूँ? कभी मन दिल में हँसी का महौल था तो कभी नाचने–गाने का मौका, कभी मोटिवेशनल क्लासेस, तो कभी खेल के मस्ती। दिन किस तरह बीत गए पता ही नहीं चला। न घर याद था, न गाँव। महौल इतना आनंदित था कि मैं अपने दोस्तों को भी भूल चुका था। इतना तक की मुझे फोन चलाने की आदत थी पर महौल इस कदर बीत रहा कि मोबाईल तक को भूल चुका था। सबसे अच्छा मुझे यहाँ पर चलायी जाने वाली प्रार्थना सभा थीं जो सभी लोगों को अचम्भित कर दिया क्योंकि प्रत्येक दिन अलग–अलग धर्मों से होने वाली अलग–अलग प्रार्थना सभाएँ चलायी गई। जो सबके दिल को आनंदित कर दिया। इस महाविद्यालय के इस कार्य के लिए मैं दिल से कहना चाहता हूँ–

डिब्बे में डिब्बा, डिब्बा में केक, PTEC कॉलेज लाखों में एक।

मेहनत अच्छी हो तो रंग लाती है, मेहनत गहरी हो तो सबको भाती है, मेहनत नादान हो तो टूट जाती है, पर अगर मेहनत PTEC कॉलेज के विद्यार्थी और शिक्षकों जैसे हो, तो इतिहास बना देती है।

जेवियर भेंगरा
प्रथम वर्ष ''A''

"लोग क्या सोचेंगे" सोचकर पीछे नहीं हटना

मो. खालिद के अनुभवों को सुनकर मुझे बहुत अजीब और आसाधारण सा लगा। जब कोई इंसान या व्यक्ति अपनी अंतर–आत्मा को सुनता है और उसको करके दिखाता है तो वह महान बनता है। उन्ही में से एक मो. खालिद भी हैं। जिस काम को समाज हीन या घृणा की दृष्टि से देखता है, उसका नाम उन्होंने दिया 'कल्याण'।

मुर्दा कल्याण के बारे सुनकर मुझे अजीब इसलिए लगा क्योंकि मैं इन सब बातों एवं कामों से अपरिचित थी। मैंने समाजसेवक मो. खालिद की बातों को बहुत ही ध्यानपूर्वक सुना और मन में उनके प्रति आदर और सम्मान की भावना जगी। जब उनके अनुभव (रिम्स राँची, 2010) को सुनी तो बहुत ही बुरा लगा। जब मनुष्य जिंदा रहता है तो वह अपनों के लिए सबकुछ करता है, पर जब मर जाता है तो उसका कोई नहीं। ऐसे लोगों को मान–सम्मान के साथ दफनाने या जलाने वाले मो. खालिद का मैं बहुत आभारी हूँ। उनकी बातों से मैं बहुत ही प्रेरित हुई जो निम्न प्रकार है–

1. जो भी काम हो, मुझे लगन के साथ करना है।
2. लोग तिरस्कार करेंगे, लेकिन काम को करते रहना है।
3. जहाँ हम अच्छा कर सकते हैं या सेवा दे सकते हैं, अवश्य देना है।
4. लोग क्या सोचेंगे सोचकर पीछे नहीं हटना है।
5. उनकी बातों को सुनकर मुझमें भी मदद की भावना जगी।

निर्मला दिग्गी
प्रथम वर्ष "A"

"मुर्दा कल्याण एवं रोटी बैंक" : a mission

I was inspired by the words and thoughts of Md. Khalid to help the needy people. His thoughts are very different from others. He does the charity works to help the people. He buries the dead bodies of different religions according to their rituals. He feeds the hungry by Roti Bank. He cares for the poor by getting donations. By his works I learnt that I have to help others, I have to be strong in my life, should have self confidence, strong mindset, be truthful and passionate in my works.

Prince Kujur
First year "A"

सभी जीवों का सम्मान करें

समाजसेवी मो. खालिद के वक्तव्य से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। साथ–ही–साथ मुझे प्रेरणा भी मिली कि सभी लोगों को बिना जबरदस्ती के निःशुल्क सेवा अथवा मदद करूँ। हमें किसी भी जीव–जन्तु को नहीं मारना है, यदि कोई जीव–जन्तु मर गया है तो उसे सम्मानपूर्वक दफन कर देना है। हमें एक–दूसरे का आदर–सम्मान करना है। हम भी उनके जैसा, छोटे–छोटे रूपों में जैसे–कपड़ा, भोजन, पैसे, दान आदि देकर गरीबों की सहायता कर सकते हैं।

आशिक एक्का
प्रथम वर्ष "A"

ईमानदारी और काम के प्रति समर्पण

जैसे कि हम सभी को पता ही है कि कोई लावारिस मर जाता है तो उसे कोई नहीं छूता है, उनका मृत शरीर वहीं के वहीं पड़ा रहता है। लेकिन मो. खालिद एक ऐसे इंसान हैं जो कि जितने भी लावारिस और दुर्घटना वाले लाश जिसको कोई पूछने वाला नहीं रहता है उनको उनके धार्मिक रीति–रिवाज के साथ अंतिम संस्कार करते आ रहे हैं। खुशी की बात है कि मो. खालिद मुर्दा कल्याण के संचालक हैं जिन्होंने अभी तक 10 हजार से भी अधिक लाशों का अंतिम संस्कार पूरे सम्मान के साथ किया है। मुर्दा कल्याण के अलावा वृद्धा आश्रम में भी अपनी सेवा देते हैं। मेरा मानना है कि पशु हो या इंसान सबका सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार होना चाहिए।

सागर मोदी
प्रथम वर्ष "A"

निःस्वार्थ सेवा करने की भावना जागृत हुई

23 जुलाई को हमारे महाविद्यालय में समाजसेवी मो. खालिद के द्वारा मुर्दा कल्याण समिति के बारे जानकारी दी गयी। उन्होंने अपनी समिति के द्वारा हो रहे कार्यों के बारे में हम सभी को साझा किया। उन्होंने बतलाया कि वे अज्ञात मृत लाशों का अंतिम संस्कार करते हैं। चाहे वह लाश किसी भी धर्म, जाति के हों। उन्होंने अपने हाथों से कई लाशों का अंतिम संस्कार भी किए हैं। इस तरह वे मुर्दों का कल्याण करते हैं। साथ–ही–साथ वे गरीबों एवं भूखों की "रोटी बैंक" के द्वारा सेवा का महान कार्य करते हैं। उनके द्वारा बतायी बातों को सुनकर मुझमें भी असहाय व्यक्तियों की सेवा करने की भावना जागृत हुई। मैं जिस समाज में रहती हूँ वहाँ भी बहुत गरीब लोग हैं, खाने का उनके पास अभाव है, मैं उनकी निःस्वार्थ सेवा करने की इच्छा रखती हूँ। क्योंकि जितना हम दूसरों की मदद करते हैं उतना ही ईश्वर हमारी सहायता करते हैं।

शांति सुरीन
प्रथम वर्ष "A"

संत इग्नासियुस लोयोला का पर्व दिन

संत इग्नासियुस लोयोला के पर्व पर मुझे इसलिए खुशी होती है क्योंकि उनके महान कार्य, जीवन की सार्थकता और आध्यात्मिक जीवन की सार्थकता पर चिंतन करने के लिए प्रेरित करता है। हम मनुष्य को पृथ्वी पर रहने वाले जीव–जन्तु, ईश्वर की सृष्टि, वस्तुओं के प्रति ईश्वरीय दृष्टिकोण और उनमें ईश्वर की छवि देखने के लिए प्रेरित करता है।

उनका जीवन वृतान्त हमें एक सीख देता है कि हमें अपने जीवन को किस प्रकार सुन्दर बनाना है। वह हमेशा मुझे याद दिलाता है कि मानव जीवन का मकसद ईश्वर की स्तुति, आदर और सेवा करने के लिए हुई है। जिसके कारण मुझे एक मकसद मिल जाता है जो मैं उसके अनुसार अपने जीवन को जीने का प्रयास करता हूँ।

इस तरह से इस पर्व के अवसर पर मुझे बहुत खुशी का अनुभव हुआ। इस साल हमारे पड़ोसी विद्यालय की भागीदारी ने खुशी में चार चाँद लगा दिया।

सुधीर ओड़ेया
द्वितीय वर्ष "B"

मैं बहुत उत्साहित थी

लोयोला दिवस का मुझे बहुत दिनों से इंतजार था। जब तैयारी शुरू हुई थी तो मैं बहुत उत्साहित थी, क्योंकि कॉलेज में यह पहला बड़ा कार्यक्रम था। मिस्सा बहुत ही भक्तिमय था, जिसमें भाग लेकर मुझे बहुत ज्यादा खुशी हुई। सांस्कृतिक कार्यक्रम में एक से बढ़कर एक कार्यक्रम की प्रस्तुति ने बैठे–बैठे ही खुशी से नाचने को मजबूर कर दिया। फादर के द्वारा बताये एक बात मुझे बहुत ज्यादा प्रभावित किया कि संत इग्नासियुस ने खुद के लिए जीना छोड़कर दूसरों के लिए जीना शुरू कर दिया। खुद के लिए जितना करें, संतुष्टि नहीं मिलती है, परंतु दूसरों को छोटी–छोटी मदद करके बहुत ज्यादा खुशी और संतुष्टि मिलती है। इसलिए मैं भी एक अच्छी शिक्षिका बनकर बच्चों को अच्छी शिक्षा के साथ हर क्षेत्र में सहयोग करूँगी और उन्हें भी सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित करूँगी।

साक्षी लकड़ा
प्रथम वर्ष "A"

कम समय में ही अधिक आनंद लिया

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी हमलोगों ने 31 जुलाई को संत इग्नासियुस लोयोला का पर्व बहुत ही धूमधाम से मनाया। लेकिन इस वर्ष पर्व मनाने का अंदाज बहुत ही अलग था। नया स्थान, नया कॉलेज तथा दोस्तों के साथ बहुत ही खुशी के साथ पर्व को मनाया। यह पर्व कई यादगार पलों में से एक रहा।

यह कार्यक्रम मिस्सा–बलिदान के द्वारा प्रारंभ हुआ। यह बहुत ही अच्छा रहा। मिस्सा के आरंभ में लोयोला की संक्षिप्त जीवनी बतायी गई तथा मिस्सा का उपदेश भी बहुत अच्छा रहा। गायक मंडली में एक से बढ़कर एक गायक होने के कारण उन्होंने अपनी मधुर वाणी से मिस्सा को भक्तिमय बनाया।

मिस्सा पूजा समाप्त होने के बाद नास्ता की व्यवस्था थी। नास्ता करने के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम था। सांस्कृतिक कार्यक्रम छोटा था लेकिन कहा जाता है न short and sweet ठीक उसी तरह हमारा कार्यक्रम रहा। छोटे से बड़े सभी अपनी कला का प्रदर्शन करते नजर आये। यही वजह रहा कि वाह–वाही की आवाज पूरे सभागार में गूँज रही थी।

जिन लोगों को मंच में मौका नहीं मिला वे अपनी खुशी का प्रदर्शन सामूहिक नाच के द्वारा प्रकट किये। नाचने का समय सीमित था, लेकिन प्रशिक्षणार्थी कम समय में अधिक आनंद लेना अच्छी तरह जानते हैं।

अंत में हमारा भोजन का कार्यक्रम था। इसकी व्यवस्था boys hostel में की गयी थी। जिसमें हमें स्वादिष्ट भोजन कराया गया। सभी ने अच्छे से भोजन का लुफ्त उठाया।

निष्कर्ष के रूप में मैं यह कह सकता हूँ कि इस पर्व को मनाने के लिए सभी अपने–अपने स्तर से बहुत मेहनत किये। जिसके फलस्वरूप हमारा सारा कार्यक्रम सुव्यवस्थित तथा सफल रहा। जिन लोगों को अपना कार्यभार सौंपा गया था, वे ईमानदारी, मेहनत तथा लगनता से अपना कर्त्तव्य समझकर कार्यों को पूरा किया।

अरनेस्ट भेंगरा
प्रथम वर्ष "A"

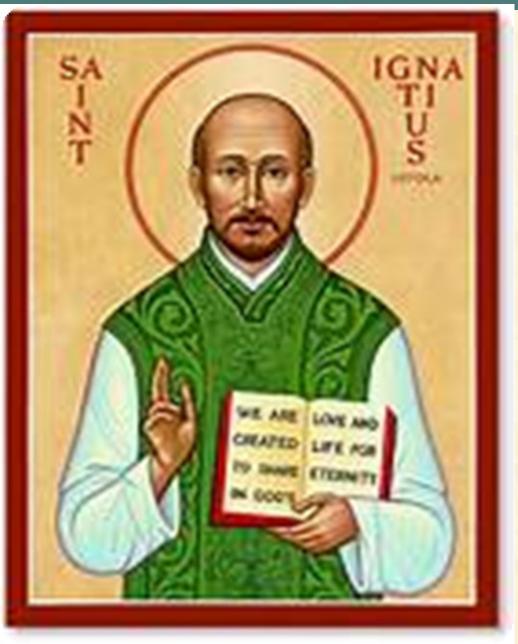

लोयोला दिवस

आ गया लोयोला दिवस
उड़ गये सबके होश
आओ सब मेरे प्यारो
नाचो गाओ थकान दूर करो

लोयोला के पथ पर
दिखाएँ हम सब चलकर
ऐसा कर जाए
कि दुनिया देखे हम है वीर

हमें तू राह दिखा
और प्रेम करना सिखा
तू था सच्चा प्रेमी
और ईश्वर का सच्चा सेवी

तू हमेशा उदार बना रहा
लोगों की सेवा करता रहा
ईश्वर से बिनती कर
हम हैं उनके छोटे अनुयायी
आशीष प्रदान कर।

समीरा टेटे
द्वितीय वर्ष "B"

बदलाव के लिए तैयार रहें

संत इग्नासियुस लोयोला की जीवनी से मुझे यह प्रेरणा मिली कि जो मैं चाहती हूँ वह अवसर आने पर पूरा हो जाता है। लोयोला के जीवन में भी ऐसा ही हुआ। वीर योद्धा होते हुए भी वे ईश्वर के सामने साधारण और कमजोर बन गया। वे ईश्वर के लिए एक वीर योद्धा बनकर लोगों के जीवन में अपने कार्य और शिक्षा के द्वारा ईश्वर का अनुभव कराया। इससे मुझे एहसास हुआ कि हमेशा बदलाव के लिए तैयार रहना है, न जाने कब और क्या होने वाला है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत ही अच्छा रहा। सबों ने खुले दिल से भाग लिया। सभी ने अपनी–अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया और दूसरे कामों में भी एक–दूसरे का सहयोग कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

निर्मला दिग्गी
प्रथम वर्ष "A"

समूह में किसी चीज को सीखने में आसानी होती है

31 जुलाई का कार्यक्रम मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं पहले भी लोयोला पर्व हाई स्कूल में मनायी थी, लेकिन यहाँ का कार्यक्रम मुझे बहुत प्रभावित किया।

दिन की शुरूआत मिस्सा के साथ की गयी, जो काफी भक्तिमय रहा। मिस्सा के दौरान नए–नए गानों को गाने में काफी आनंद हुआ। उसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें अलग–अलग तरह के कार्यक्रम प्रस्तुत किए गये। मैं वंदना नृत्य में भाग ली थी। इसमें मुझे काफी कुछ सीखने को मिला, कि किस प्रकार समूह के साथ रहकर किसी चीज को सीखने में आसानी होती है। द्वितीय वर्ष की छात्राओं के द्वारा एक छोटी नाटिका का मंचन किया गया, वह काफी प्रभावशाली रहा। इससे मुझे एहसास हुआ कि आजकल की युवा पीढ़ी इंटरनेट के पीछे लगी हुई है, उन्हें वर्तमान जीवन में चल रही घटनाओं से कोई लेना देना नहीं। मिडिल स्कूल और लोयोला स्कूल के बच्चों के नाच को देखकर बहुत ही खुशी हुई। लग रहा था कि मैं उठकर नाचने लगूँ। आदिवासी नाच भी काफी मनमोहक था। मुझे एहसास हुआ कि हमारी संस्कृति, जो कि खत्म होती जा रही है, इन्हीं छोटे–छोटे कार्यक्रमों के द्वारा बचाया जा सकता है। संत इग्नासियुस लोयोला की यह प्रार्थना ने मुझे स्पर्श किया– "हे प्रभु! हमें देना सिखा.... ।"

प्रिज्मा टोप्पो
प्रथम वर्ष "A"

"जीवन में संघर्ष जितनी कठिन होगी सफलता उतनी ही शानदार होगी"

व्यक्तित्व विकास सेमिनार मेरे लिए बहुत ही लाभदायक रहा। यदि हमें जीवन में आगे बढ़ना है तो सबसे पहले हमारी सोच तथा विचारों को बदलना होगा। तभी हम हमारे जीवन में सफलता हासिल कर पायेंगे। हमें सफलता प्राप्त करने के लिए ज्ञान की प्राप्ति तथा रोज दिन नये–नये चीजों को सीखने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में हमें हमारे अंदर की खामियाँ, गुण तथा क्षमताओं को भी पहचानना होगा। अपने आप में आत्मविश्वास होनी चाहिए कि मैं कर सकती हूँ और इस कार्य में ईश्वर हमारे साथ है।

हमारे अंदर के गुणों तथा क्षमताओं को दूसरों के द्वारा मुझे पहचानने से खुशी हुई कि मेरे अंदर ये कार्य करने की भी क्षमताएँ तथा गुण हैं। जीवन में व्यक्ति तब सफल होता है जब वह जीवन में खुश रहता है और जीवन में खुश रहना ही जीवन का महत्त्वपूर्ण भाग है।

हमारा मन हमें भविष्यत् काल और भूतकाल की सैर कराते हैं। लेकिन हमारे जीवन में हमेशा वर्तमान काल में जीवन यापन करना चाहिए जो सच्चा है।

अलका खाखा

द्वितीय वर्ष "A"

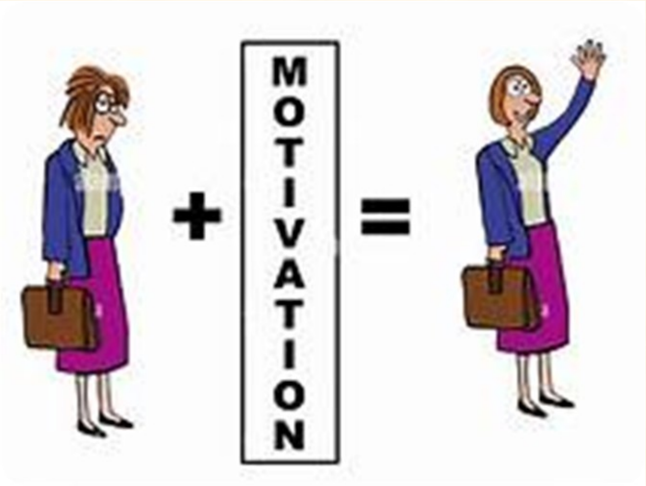

"सच्ची शिक्षा वही है जिससे हमारे मन और दिल का विकास एक साथ होता है"

फा. लॉरेंस के द्वारा व्यक्तित्व विकास सेमिनार के दौरान बहुत सारे विडियो दिखाया गया। उनमें से एक विडियो में, एक परिवार का सीन दिखाया गया था। जिसमें एक महिला के दोनों हाथ नहीं थे। फिर भी, वह अपने छोटे बच्चे की देख–रेख बहुत अच्छी तरह से कर रही थी। वह कभी हार नहीं मानी, कभी पीछे पलट कर नहीं देखा और आगे बढ़ते ही गयी। यह मेरे अंतरमन को छू गया। मुझे लगा कि मेरे पास दोनों हाथ–पैर सही सलामत है। मुझे कोई भी कार्य करने से पीछे नहीं हटना चाहिए। उस महिला के समान ही कोशिश करना है तभी जीवन में आगे बढ़ूंगा।

हम यहाँ शिक्षक बनने आये हैं तो शिक्षक के अच्छे गुण होने चाहिए। बच्चों के प्रति दयावान बनने के लिए मुझमें आत्मविश्वास होना है। अपने जीवन में क्या–क्या करना है, उसके बारे में तथा बिना मनन का हमारा जीवन अधूरा है। हमें अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हर कठिनाईयों का सामना करते हुए आगे बढ़ना है।

आभा तिर्की

द्वितीय वर्ष "A"

"सच्ची शिक्षा वही है जो मन, दिल और शरीर का विकास करता है"

महाविद्यालय में "व्यक्तित्व विकास" विषय पर एक सेमिनार सम्पन्न हुआ, जिसके वक्ता थे फा. लॉरेंस। उन्होंने अपने वक्तव्य में हमे एक आदर्श शिक्षक बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने हमारे अंदर छुपे प्रतिभा एवं क्षमताओं को बाहर उजागर करने तथा जागरूक होने के लिए रास्ता दिखाया।

उनके वक्तव्य से मिले विचारों को मैं निम्न विन्दुओं के रूप में साझा करना चाहता हूँ–

1. एक शिक्षक को बच्चों के मन को पढ़ने की ज्योति बनना है।
2. शिक्षक को सबसे पहले स्वयं प्रकाश की तरह उजाला बनना है जिससे कि वह दूसरों को भी प्रकाश दे सके।
3. एक शिक्षक को हमेशा सच्चा मार्गदर्शक बनना है। साथ ही, ऐसा शिक्षक बनना है जो दूसरों के लिए सबसे अच्छा प्रेरणा स्रोत का कारण या वजह बन सके।
4. शिक्षक को दूसरों या बच्चों के सामने एक अच्छा नमूना या उदाहरण बनना है, जिससे कि वे प्रेरित हो सकें।

महात्मा गाँधी का कथन मुझे सबसे ज्यादा प्रेरित किया, और वो है– "यदि हम दूसरों में बदलाव देखना चाहते हैं, तो स्वयं को सबसे पहले बदलना होगा।"

रोशन केरकेट्टा
द्वितीय वर्ष "A"

"पैसा कमाना ही सफलता नहीं"

फा. लॉरेंस के इस प्रोग्राम के द्वारा मुझे सच्ची सफलता के बारे में जानकारी मिली। क्योंकि केवल डिग्री प्राप्त कर पैसा कमाना ही सफलता नहीं है, बल्कि अपने गुणों के द्वारा, अपनी ही कमाई से, परिवार में अपने भाई–बहनों एवं माता–पिता को खुश रखना, अपने व्यवहार से परिवार में स्नेह, एकता और खुशी स्थापित करना ही सच्ची सफलता है। मैंने अनुभव किया कि कभी खुद को हीन और तुच्छ नहीं मानना है, बल्कि हर समय सभी कार्यों के लिए तत्पर रहना है और कार्य को नहीं जानने पर भी प्रयास करना है।

नीरज
द्वितीय वर्ष

"व्यक्तित्व हमारे सम्पूर्ण व्यवहार को प्रभावित करता है"

व्यक्तित्व से अभिप्राय व्यक्ति के रूप, रंग, कद, चौड़ाई, मोटाई, लम्बाई अर्थात् शारीरिक संरचना, व्यवहार तथा मृदु भाषी होने से लगाया जाता है। ये समस्त गुण व्यक्ति के समस्त व्यवहार का दर्पण है। अर्थात् व्यक्तित्व की अवधारणा अत्यंत जटिल है।

हम क्या हैं? और क्या बनने की आशा रखते हैं? वही व्यक्तित्व है। यह हमारे सम्पूर्ण व्यवहार को प्रभावित करता है। बोल–चाल की भाषा में व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग शारीरिक बनावट और सौंदर्य के लिए किया जाता है। सेमिनार में फा. लॉरेंस के द्वारा एक आदर्श शिक्षक के गुण एवं क्षमताओं को बहुत ही अच्छी तरह से समझाया गया। इससे मेरा आत्मविश्वास बढ़ा। विभिन्न प्रकार से मैं प्रेरित हुआ और बहुत ही खुशी का अनुभव हुआ। मुझे यकीन हो गया है कि भविष्य में मैं समाज की सेवा और बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए कृतसंकल्प हूँ।

अमिता कुजूर
द्वितीय वर्ष "A"

धान रोपनी

रोपनी कार्य में कॉलेज के सभी विद्यार्थी एवं व्याख्यातागण मिलजुल कर एवं बढ़—चढ़कर भाग लिए, यह देखकर मन उल्लास से भर गया। एक साथ लगभग 200 लोग रोपनी कार्य में लगे थे। जिससे काम इतना जल्दी खत्म हो गया कि कार्य करने का एहसास तक नहीं हुआ। सब हँसते, गाते कार्य कर रहे थे। थकान का भी पता नहीं चला। गाना गाते—गाते एवं मस्ती करते काम हुआ। काम में ऐसा आनंद मिला जो पहले कभी नहीं एहसास हुआ था।

जेवियर भेंगरा

प्रथम वर्ष “A”

रोपनी कार्य में बढ़—चढ़ कर हिस्सा लिया

रोपनी कार्य मेरे लिए बहुत ही मुश्किल था, क्योंकि मैंने पहले अपने जीवन में इस कार्य को नहीं किया था। मैं प्राचार्य को इसके लिए धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने मुझे इस कार्य को सीखने के अवसर बनाया और मैंने इसे स्वेच्छा से स्वीकार किया। साथ ही, बढ़—चढ़ कर हिस्सा लिया।

शुरूआत में मैं बहुत धीरे—धीरे रोप रहा था। बाद में मेरे कार्य में गति आ गया। तब मुझको एहसास हुआ कि मैं रोपनी कार्य अच्छी तरह से कर सकता हूँ। इस कार्य के माध्यम से मैंने सीखा कि किसी भी बड़े कार्य को करने के लिए हमें एक समूह में होना आवश्यक है। जब हम किसी कार्य को एक साथ करते हैं तो वह कार्य हमारे लिए बहुत आसान व सरल हो जाता है तथा कार्य में हमें आनन्द, खुशी और चैन मिलता है।

विल्सन खेस

प्रथम वर्ष “A”

कड़ी मेहनत की जरूरत होती है।

हम जानते हैं कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि कार्य में कड़ी मेहनत की जरूरत होती है। इस कार्य को देखने एवं करके सीखने का सुनहरा अवसर मुझे हमारे महाविद्यालय के खेतों में रोपनी कार्य के द्वारा प्राप्त हुआ। मुझे महसूस हुआ कि कृषि खेती करने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि जीवन जीने की एक कला भी है। हरेक जन की भूख खेती के माध्यम से ही मिटती है। कीचड़ में घुसकर छोटे—मोटे जख्मों से घायल होकर किस प्रकार खेती होती है उसका अनुभव प्राप्त हुआ। रोपते वक्त गीतों के माध्यम से मनोरंजन करते हुए हँसी—खुशी से कार्य को करने का अनुभव प्राप्त हुआ।

क्रूसिता तिर्की

प्रथम वर्ष “A”

उत्सुकता से कीचड़ में जा घुसी

रोपनी कार्य के लिए हमें दल के अनुसार काम बाँटा गया था। मुझे बहुत अच्छा अनुभव हुआ, क्योंकि मैं पहली बार रोपनी कार्य कर रही थी। शुरूआत में मैं संकोच कर रही थी कि रोपने जानूंगी या नहीं। कीचड़ में भी घुसने का मन नहीं कर रहा था। पर सभी लोगों की उत्सुकता देखकर मैं भी कीचड़ में जा घुसी। फिर तो क्या, रोपते–रोपते मजा आ रहा था और कीचड़ से निकलने का मन ही नही कर रहा था। सभों ने बहुत मस्ती किया और काम कैसे समाप्त हो गया पता ही नहीं चला।

मुस्कान लकड़ा
प्रथम वर्ष "A"

सभों में उत्साह दिखाई दे रहा था

रोपनी कार्य के होने का इंतजार बहुत दिनों से मैं कर रही थी। उस दिन मैं और अन्य प्रशिक्षु भी बहुत खुश दिखाई दे रहे थे। सभों में कार्य करने के लिए उत्साह दिखाई दे रहा था। सभों को अपने–अपने दल में काम करने का अच्छा अवसर मिला और सभी एक–दूसरे की मदद करते हुए नजर आए। मेरे दल को बिचड़ा उखाड़ने का कार्य मिला था। उसे हमने बखूबी किया।

मिलन तिर्की
प्रथम वर्ष "B"

समूह में कार्य करने का मजा

गीत गाते हुए रोपनी कार्य करने में मुझे बहुत मजा आया। कभी इतना बड़ा समूह में नहीं रोपी थी, पर इस बार मैं इतना बड़ा समूह में रोपी और खाने–पीने के लिए बहुत ही अच्छा मिला। किसी की तबीयत भी खराब नहीं हुई। रोपनी कार्य खत्म होने के बाद भी मुझे थकावट महसूस नहीं हुआ। अतः बहुत ही अच्छा लगा।

असमीता सांडिल
प्रथम वर्ष "B"

मुझे गर्व है कि मैं एक आदिवासी हूँ

आदिवासी आबादी के अधिकारों को बढ़ावा देने और उनकी सुरक्षा के लिए प्रत्येक वर्ष 9 अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस मनाया जाता है। इसकी स्थापना 9 अगस्त 1994 ई. को जेनेवा में हुई।

हमारे महाविद्यालय में आदिवासी दिवस मनाया गया। जिसमें विभिन्न आदिवासी समूहों के द्वारा अपने–अपने रीति–रिवाजों के अनुसार नृत्य प्रस्तुत किया गया। जिसमें मुख्यतः थे– कुडुख, मुण्डा, संथाली और खड़िया। मैं असुर जाति से हूँ और मेरे जाति से सिर्फ दो लोग हैं। इसलिए अपने जाति के अनुसार नाच के लिए दल नहीं बना। अतः मैं खड़िया समुदाय में शामिल हो गई और उनका नाच सीखा। इनका नाचना–गाना अपने खड़िया रीति–रिवाज के अनुसार हुआ और देखने में भी बहुत सुन्दर रहा। मुझे तो इस प्रकार से देखकर अपने पूर्वजों की याद आने लगी थी। आदिवासी दिवस मनाकर मैं गर्व महसूस कर रही थी क्योंकि मैं भी एक आदिवासी हूँ।

शीला असुर
द्वितीय वर्ष "A"

अन्य जनजाति एवं भाषा से परिचित हुई

विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर हमारे महाविद्यालय में आदिवासी दिवस का आयोजन किया गया। इस दिन को बेहतर और यादगार बनाने के लिए सभी धर्मों को प्राथमिकता देते हुए अपनी जाति, भाषा के आधार पर नाच–गान प्रस्तुत करने का मौका मिला। मैं उराँव जाति से हूँ और मेरी भाषा कुडुख है। उराँव जाति की संख्या अधिक होने के कारण हमें दो भागों में बाँट दिया गया। मेरे दल में कुछ लोग कुडुख जानते थे और कुछ लोगों को समझ भी नहीं आता था। फिर भी सभी ने सीखने की भरपूर कोशिश की। मुझे अन्य भाषा और जाति के लोगों की भाषा सुनने एवं नृत्य देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इससे मुझे अत्यधिक खुशी हुई।

प्रिया रोस तिर्की
द्वितीय वर्ष "A"

विश्व आदिवासी दिवस का महत्त्व

विश्व आदिवासी दिवस हर साल 9 अगस्त को मनाया जाता है। दुनिया में मूल आबादी के अधिकारों को बढ़ावा देने और उनकी रक्षा करने के लिए मनाया जाता है। यह दिन विशिष्ट संस्कृतियो, भाषाओं, रीति–रिवाजों और सामाजिक योगदानों का सम्मान करने का प्रयास करता है। यह मूल आबादी द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाईयों और समस्याओं जैसे– भूमि अधिकार, सांस्कृतिक संरक्षण, पूर्वाग्रह हाशिए पर होना और सामाजिक जागरूकता फैलाने का अवसर प्रदान करता है।

आज दुनिया भर के करीब 90 से भी अधिक देशों में आदिवासी निवास करते हैं। विभिन्न प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं। अधिक आबादी होने के बावजूद आदिवासियों को कई बार अपने सम्मान और अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ता है। आदिवासियों की इसी अवस्था को देखते हुए, उनके अधिकारों और अस्तित्व के संरक्षण के लिए इस दिन को खासतौर पर मनाया जाता है।

नीलकुसुम एक्का
द्वितीय वर्ष "A"

अन्य जनजाति एवं भाषा से परिचित हुई

मैं आदिवासी मुण्डा दल की ओर से मुण्डा गाने में डांस की। मुझे मुण्डा भाषा थोड़ा बहुत पता है। फिर भी सभी मिलकर बहुत ही अच्छी तरह से गाना गाये और नाचे भी। पता ही नहीं चला कि समय कैसे बीत गया। लग रहा था कि और कुछ समय मिलता तो और अच्छा लगता।

कनकलता होरो
द्वितीय वर्ष "A"

अपनी भाषा नहीं बोल पाने से मुझे आत्मग्लानि हुई

हमारे महाविद्यालय में आदिवासी दिवस बड़े धूम–धाम से मनाया गया। जिसमें विभिन्न भाषा जैसे– मुण्डा, कुडुख, संथाली एवं खड़िया, सभी अपने समूहों के साथ नृत्य प्रस्तुत किए, जो पूरे महाविद्यालय के लिए नया था। मैं उराँव समूह में नृत्य किया। सभी भाषाओं के रीति–रिवाजों को देखकर एवं जानकर मुझे आत्मग्लानि हुई कि मैं अपनी भाषा को नहीं बोल पाता हूँ। भाषा भी एक माध्यम है जिसके द्वारा हमको पहचान मिलती है।

अनुराग एक्का
द्वितीय वर्ष "A"

शहीदों के नाम बुलंद नारे लगाये गये

भारत 15 अगस्त 1947 ई. को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ। उसी खुशी में हम सभी पूरे भारतवर्ष में धूमधाम से स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं। चारों ओर खुशियों की बौछार बनी रहती है। हमारे इस महान देश को आजाद कराने में कई वीरों ने अपनी जान कुर्बान कर दी, अपने आपको देश के लिए बलिदान कर दिए। इसी कारण हम आज सुख–चैन की साँस ले पा रहे हैं और खुशीपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आजादी की खुशी में हमारे महाविद्यालय में भी झंडा फहराया गया। परेड का अद्‌भुत नजारा पेश किया गया, साथ ही, विभिन्न झाकियां प्रस्तुत की गई और देश भक्ति गाना गाये गये। अंत में वीर शहीदों के नाम बुलंद नारे लगाये गये।

मेरी मार्ग्रेट खेस
द्वितीय वर्ष “B”

हमारा प्यारा भारत देश

स्वतंत्रता दिवस प्रत्येक भारतीय को एक नई शुरूआत की याद दिलाता है। हमारे महाविद्यालय में भी धूमधाम से स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। हमारा महाविद्यालय के प्रांगण में तिरंगा लहरा रहा था। अभ्यास मध्य विद्यालय, जेवियर उच्च विद्यालय एवं महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थी बड़े जोश एवं उमंग के साथ, कदम से कदम मिलाकर शानदार परेड प्रदर्शन के द्वारा लोगों में देश–प्रेम की भावना जगाए। इस प्रकार महाविद्यालय प्रांगण रंग–बिरंगे कार्यक्रमों से एवं नारों के जयघोष से झूम उठा था।

अलबिना कन्डुलना
द्वितीय वर्ष “B”

स्वतंत्रता सेनानियों के नारे लगाये

महाविद्यालय परिसर में स्वतंत्रता दिवस का मनमोहक खुशबू चारों ओर फैला हुआ था। सभी प्रशिक्षणार्थी जोश एवं उमंग से भरे हुए थे। महाविद्यालय ही नहीं बल्कि हर भारतीय के लिए वह गौरव का दिन था। सभी प्रशिक्षणार्थियों, विद्यार्थियों और दर्शकों में एक स्वतंत्र भारत के नागरिक होने का गर्व दिखाई दे रहा था। महाविद्यालय के प्रांगण में जेवियर उच्च विद्यालय के प्राचार्य फा. जोन के द्वारा झण्डोतोलन किया गया। स्कूल के छात्र–छात्राओं एवं प्रशिक्षणार्थियों के द्वारा मनमोहक परेड किया गया। तत्पश्चात देशभक्ति गीत, नृत्य और लघु–नाटिका के माध्यम से आजाद भारत का अनुभव कराया गया। साथ ही, देश के उन स्वतंत्रता सेनानियों को भी याद किया गया, जिन्होंने देश की आजादी के लिए जान की परवाह किए बिना संघर्ष किया था। अंत में देश के नाम स्वतंत्रता सेनानियों के नारे लगाकर अपनी आजादी की खुशी मनाये और उस दिन को वीर सेनानियों के नाम किए।

निरूपा बाखला
द्वितीय वर्ष "B"

वीरों और देशभक्तों को याद किया

15 अगस्त को पूरा भारत स्वतंत्रता दिवस के जश्न को पूरे जोर–शोर से मना रहा था। हम भी हमारे महाविद्यालय में इस जश्न का लुफ्त उठा रहे थे।

इस दिन को यादगार बनाने के लिए और अपने अन्दर पनप रहे खुशी और देशभक्ति को हमने विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा प्रकट करने का प्रयास किया। हमने उन वीरों और देशभक्तों को याद किया जो हमारे देश की शान है, मान है। आज हमें वो शान और मान देखने को नहीं मिलता है क्योंकि आज की परिस्थिति में बस जात–पात, अपने धर्म को सर्वश्रेष्ठ बनाने की होड़, गरीबी की मार, अमीरी की अकड़, भ्रष्टाचार और अन्य बुराईयाँ ही देखने को मिलती हैं। सवाल यह है कि हम कैसे कह सकते हैं कि आजादी या स्वतंत्रता का हम महोत्सव मना रहे हैं। हमें भारतीय होने का गर्व है, पर आज के समय में परिस्थिति को देखते हुए मैं कहना चाहता हूँ कि गुलामी क्या थी ये हम क्या जाने, हमने तो हमेशा आजादी में ही सांस ली है। गुलामी क्या है– ये वो ही जाने यो बतायेंगे, जिन्होंने आजादी की कुर्बानी दी है।

सुधीर ओड़ेया
द्वितीय वर्ष "B"